16

श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र-V

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने देवी ललिता के 1000 नामों में से कुछ नामों के विषय में जाना। इस पाठ में उनके अन्य नामों के विषय में जानेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- सूक्त में दिये श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- देवी ललिता की विशेषताएं बता पाने में; और
- उनके नामों का अर्थज्ञान कर पाने में ।

16.1 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (101-113)

कालरात्यादि–शक्त्यौघ–वृता स्निग्धौदनप्रिया ।
महावीरेन्द्र–वरदा राकिण्यम्बा–स्वरूपिणी ।। १०१।।

491) कालरात्यादिशक्त्यौघवृता – वह जो कालरात्रि जैसे शक्तिपीठों से घिरा हुआ है। कंदिथ, गायत्री आदि

492) स्निग्धौदानप्रिया – वह जो घी मिश्रित चावल पसंद करता है

493) महावीरेन्द्रवरदा – वह जो महान नायकों को वरदान देता है या वह जो महान ऋषियों को वरदान देता है

494) राकिण्यम्बा स्वरूपिणी – वह जिसके पास राकिनी जैसे नाम हैं

मणिपूराब्ज–निलया वदनत्रय–संयुता ।
वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ।। १०२।।

495) मणिपुराब्जनिलया – वह जो दस पंखुड़ियों वाले कमल में निवास करती है

496) वदनत्रयसंयुता – वह जिसके तीन चेहरे हैं

497) वज्रादिकायुधोपेता – वह जिसके पास वज्रायुध जैसे हथियार हैं

498) डामर्यादिभिरावृता – वह जो दमेरी जैसी देवी से घिरी हुई है

टिप्पणी

रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न–प्रीत–मानसा ।
समस्तभक्त–सुखदा लाकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ।। १०३।।

499) रक्तवर्णा – वह जो खून का रंग है

500) मांसनिष्ठा – वह जो जीवित प्राणियों में मांस की अध्यक्षता करता है

501) गुडान्नप्रीतमानसा – वह जो गुड़ के साथ मिश्रित चावल पसंद करती है

502) समस्तभक्तसुखदा – वह जो अपने सभी भक्तों को सुख देती है

503) लाकिन्यम्बास्वरूपिणी – वह जो लकीनी योगिनी के नाम से प्रसिद्धै

स्वाधिष्ठानाम्बुज–गता चतुर्वक्त्र–मनोहरा ।
शूलाद्यायुध–सम्पन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ।। १०४।।

504) स्वाधिष्ठानाम्बुजगता – वह जो छः पत्ती वाले कमल में रहती है

505) चतुर्वक्त्रमनोहरा – वह जिसके चार सुंदर चेहरे हैं

506) शूलाद्यायुधसम्पन्ना – वह जिसके पास स्पीयर जैसे हथियार हैं

507) पीतवर्णा – वह जो सुनहरे रंग की है

508) अतिगर्विता – वह जो बहुत गर्व है

मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि–समन्विता ।
दध्यन्नासक्त–हृदया काकिनी–रूप–धारिणी ।। १०५ ।।

509) मेदोनिष्ठा – वह जो वसायुक्त परत में है

510) मधुप्रीता – वह जिसे शहद पसंद है

511) बन्धिन्यादिसमन्विता – वह जो शक्ति से घिरा हुआ है उसे बन्दिनी कहते हैं

512) दध्यन्नासक्तहृदया – वह जो दही चावल पसंद करता है

513) काकिनीरूपधारिणी – वह काकिनी जैसा दिखता है

मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च–वक्त्राऽस्थि–संस्थिता ।
अङ्कुशादि–प्रहरणा वरदादि–निषेविता ।। १०६ ।।

514) मूलाधाराम्बुचरूढा – वह मूलाधार कमला या कमल पर विराजमान है जो मूल आधार है

515) पञ्चवक्त्र – वह जिसके पाँच मुख हैं

516) अस्थिसंस्थिता – वह जो हड्डियों में निवास करती है

517) अङ्कुशादिप्रहरणा – वह जो अंकुशा और अन्य हथियार रखती है

518) वरदादिनिषेविता – वह जो वर्धा और अन्य शकियों से घिरा हुआ है

टिप्पणी

मुद्गौदनासक्त–चित्ता साकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ।
आज्ञा–चक्राब्ज–निलया शुक्लवर्णा षडानना ।। १०७ ।।

519) मुद्गौदनासक्तचित्ता – वह जो हरे चने की दाल के साथ मिश्रित चावल पसंद करती है

520) साकिन्यम्बास्वरूपिणी – वह जिसका नाम सकनी है

521) आज्ञाचक्राब्जनिलया – वह कमल पर बैठती है जिसे अग्न चक्र या आज्ञाचक्र कहा जाता है

522) शुक्लवर्णा – वह जो सफेद रंग का है

523) षडानना – वह जिसके छह चेहरे हैं

मज्जासंस्था हंसवती–मुख्य–शक्ति–समन्विता ।
हरिद्रान्नैक–रसिका हाकिनी–रूप–धारिणी ।। १०८ ।।

524) मज्जासंस्था – वह जो शरीर के आसपास वसा में है

525) हंसवतीमुख्यशक्तिसमन्विता – वह शमशीर से घिरा हुआ जिसे हमसावथी कहा जाता है

526) हरिद्रान्नैकरसिका – वह जो हल्दी पाउडर के साथ मिश्रित चावल पसंद करती है

527) हाकिनीरूपधारिणी – वह जिसका नाम हकीनी है

सहस्रदल–पद्मस्था सर्व–वर्णोप–शोभिता ।

सर्वायुधधरा शुक्ल–संस्थिता सर्वतोमुखी ।। १०९।।

528) सहस्रदलपद्मस्था – वह हजार पंखुड़ियों वाले कमल पर विराजमान है

529) सर्ववर्णोपशोभिता – वह जो सभी रंगों में चमकता है

530) सर्वायुधधरा – वह जो सभी हथियारों से लैस है

531) शुक्लसंस्थिता – वह जो शुक्ल या वीर्य में है

532) सर्वतोमुखी – वह जिसके पास हर जगह चेहरे हैं

सर्वौदन–प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ।

स्वाहा स्वधाऽमर्ति मेधा श्रुतिः स्मृर्ति अनुत्तमा ।। ११०।।

533) सर्वौदनप्रीतचित्ता – वह जो सभी प्रकार के चावल पसंद करता है

534) याकिन्यम्बास्वरूपिणी – वह याकिनी के रूप में नामित है

535) स्वाहा – वह अंत में आह्वान 'अग्नि' का उद्देश्य है मंत्रों का जाप करते हुए अग्नि को आहुति देते हैं।

536) स्वधा – वह जो स्वधा का रूप है

टिप्पणी

537) अमात्यः – वह जो अज्ञानता है

538) मेधा – वह जो ज्ञान (ज्ञान) के रूप में है

539) श्रुतिः – वह जो वेदों के रूप में हो

540) स्मृतिः – वह जो वेदों का मार्गदर्शक है

541) अनुत्तमा – वह जो श्रेष्ठ है; वह जो सबसे ऊपर है

पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण–कीर्तना ।

पुलोमजार्चिता बन्ध–मोचनी बन्धुरालका ।। १११।।

542) पुण्यकीर्तिः – वह अच्छे कामों के लिए प्रसिद्ध है

543) पुण्यलभ्या – वह जो अच्छे कर्मों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है

544) पुण्यश्रवणकीर्तना – वह जो सुनने वालों के लिए अच्छा है और जो उसके बारे में गाते हैं

545) पुलोमजार्चिता – वह जो इंद्र की पत्नी द्वारा पूजा की जाती है

546) बन्धमोचनी – वह हमें बंधन से मुक्त करता है

547) बन्धुराकला – वह जिसके पास लहरें हैं, जो लहरों के सदृश है

विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि–जगत्प्रसूः ।

सर्वव्याधि–प्रशमनी सर्वमृत्यु–निवारिणी ।। ११२।।

548) विमर्शरूपिणी – वह देखने से छिपी है

549) विद्या – वह सीखने वाली है

550) वियदादि जगत्प्रसूः – वह जिसने पृथ्वी और आकाश का निर्माण किया

551) सर्वव्याधिप्रशमनी – वह जो सभी बीमारियों को ठीक करता है

552) सर्वमृत्युनिवारिणी – वह जो सभी प्रकार की मृत्यु से बचती है

अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मष–नाशिनी ।

कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष–निषेविता ।। ११३।।

553) अग्रगण्य – वह जो सबसे ऊपर है

554) अचिन्त्यरूपा – वह जो विचार से परे है

555) कलिकल्मषनाशिनी – वह जो अन्धकार युग की बीमारियों को दूर करता है

556) कात्यायनी – वह ओडियाना पीठ में कैथीनी है या वह जो ऋषि कात्यायन की बेटी है

557) कालहन्त्री – वह जो मृत्यु के देवता को मारता है

558) कमलाक्षनिषेविता – वह जो कमल विष्णु द्वारा पूजित है

16.2 श्रीललितासहस्रनामस्तोत्र (114-125)

ताम्बूल–पूरित–मुखी दाडिमी–कुसुम–प्रभा ।
मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ।। ११४।।

559) ताम्बूलपूरितमुखी – वह जिसका मुँह सुपारी, सुपारी और चूने से भर गया है

560) दाडिमीकुसुमप्रभा – वह जिसका रंग अनार की कली की तरह है

561) मृगाक्षी – वह जिसकी मृग जैसी आँखें हों

562) मोहिनी – वह जो करामाती है

563) मुख्या – वह जो प्रमुख है

564) मृदानी – वह जो सुख देता है

565) मित्ररूपिणी – वह जो सूर्य का रूप है

नित्यतृप्ता भक्तनिर्धि नियन्त्री निखिलेश्वरी ।
मैत्र्यादि–वासनालभ्या महाप्रलय–साक्षिणी ।। ११५।।

566) नित्यतृप्ता – वह जो हमेशा संतुष्ट रहती है

567) भक्तनिर्धि – वह भक्तों का खजाना घर है

568) नियन्त्री – वह नियंत्रित करता है

569) निखिलेश्वरी – वह जो हर बात के लिए देवी है

570) मैत्र्यादिवासनालभ्या – वह जिसे मैत्री (मित्रता) जैसी आदतों से प्राप्त किया जा सकता है

571) महाप्रलयसाक्षिणी – वह जो महान प्रलय का साक्षी है

परा शक्तिः परा निष्ठा प्रज्ञानघन–रूपिणी ।

माध्वीपानालसा मत्ता मातृका–वर्ण–रूपिणी ।। ११६ ।।

572) पराशक्तिः – वह जो अंतिम ताकत है

573) परनिष्ठा – वह जो एकाग्रता के अंत में है

574) प्रज्ञानघनरूपिणी – वह जो सभी श्रेष्ठ ज्ञान की पहचान है

575) माध्वीपानालसा – वह जो ताड़ी पीने के कारण किसी और चीज में दिलचस्पी नहीं रखती है

576) मत्ता – वह बेहोश प्रतीत होती है

577) मातृकावर्णरूपिणी – वह जो रंग और आकार का मॉडल है

महाकैलास–निलया मृणाल–मृदु–दोर्लता ।

महनीया दयामूर्तिर् महासाम्राज्य–शालिनी ।। ११७ ।।

578) महाकैलासनिलया – वह जो महा कैलासा पर विराजमान है

579) मृणालमृणालमृदुदोर्लता – वह जिसके पास कमल के डंठल के रूप में हथियार हैं

580) महनीया – वह जो मन्नत के लायक हो

581) दयामूर्तिर् – वह जो दया का पात्र है

582) महासाम्राज्यशालिनी – वह सारी दुनिया की शेफ है

आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता ।

श्री–षोडशाक्षरी–विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ।। ११८ ।।

583) आत्मविद्या – वह आत्मा का विज्ञान है

584) महाविद्या – वह महान ज्ञान है

585) श्रीविद्या – वह जो देवी का ज्ञान है

586) कामसेविता – वह जो प्रेम के देवता काम की पूजा करता है

587) श्रीषोडशाक्षरीविद्या – वह जो सोलह–स्वरुप मंत्र के रूप में है

588) त्रिकुटा – वह तीन भागों में विभाजित है

589) कामकोटिका – वह जो कोमा कोटि पीठ पर बैठता है

कटाक्ष–किङ्करी–भूत–कमला–कोटि–सेविता ।

शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्र–धनुःप्रभा ।। ११९ ।।

590) कटाक्षकिङ्करीभुतकमलाकोटिसेविता – वह जो करोड़ों लक्ष्मीओं द्वारा भाग लेती है जो अपनी सरल नजर के लिए तरसती है

591) शिरःस्थिता – वह जो सिर में है

592) चन्द्रनिभा – वह पूर्णिमा की तरह है

593) भालस्थे – वह जो माथे में है

594) इन्द्रधनुःप्रभा – वह जो बारिश के धनुष की तरह है

हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर–दीपिका ।

दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ–विनाशिनी ।। १२० ।।

595) हृदयस्था – वह जो दिल में है

596) रविप्रख्या – वह जो सूर्य देव की तरह चमकता है

597) त्रिकोणान्तरदीपिका – वह जो त्रिभुज में प्रकाश की तरह है

598) दाक्षायणी – वह जो दक्ष की पुत्री है

599) दैत्यहन्त्री – वह जो असुरों को मारती है

600) दक्षयज्ञविनाशिनी – उसने रुद्र के बलिदान को नष्ट कर दिया

टिप्पणी

दरान्दोलित–दीर्घाक्षी दर–हासोज्ज्वलन्–मुखी ।

गुरुमूर्तिर् गुणनिर्धि गोमाता गुहजन्मभूः ।। १२१।।

601) दरान्दोलितदीर्घाक्षी – वह जिसके पास लंबी आंखें हैं जिनके पास थोड़ी सी हलचल हैं

602) दरहासोज्ज्वलन्मुखी – वह अपनी मुस्कान के साथ उस चमक का सामना करती है

603) गुरुमूर्तिर् – वह जो शिक्षक है

604) गुणनिर्धि – वह जो अच्छे गुणों का भंडार है

605) गोमाता – वह जो माँ गाय है

606) गुहजन्मभूः – वह भगवान सुब्रह्मण्य का जन्म स्थान है

देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश–रूपिणी ।

प्रतिपन्मुख्य–राकान्त–तिथि–मण्डल–पूजिता ।। १२२।।

607) देवेशी – वह जो देवताओं की देवी है

608) दण्डनीतिस्था – वह जो न्याय करती है और सजा देती है

609) दहराकाशरूपिणी – वह जो चौड़े आकाश के रूप में है

610) प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथिमण्डलपूजिता – वह जो पूर्णिमा से लेकर अमावस्या तक सभी पंद्रह दिनों पर पूजा जाता है

कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप–विनोदिनी ।

सचामर–रमा–वाणी–सव्य–दक्षिण–सेविता ।। १२३।।

611) कलात्मिका – वह कला की आत्मा है

612) कलानाथा – वह कला की प्रमुख हैं

613) काव्यालापविनोदिनी– वह जिसे महाकाव्यों में वर्णित किया गया है

614) सचामररमावाणीसव्यदक्षिणसेवीता – वह जो धन की देवी लक्ष्मी और सरस्वती ज्ञान की देवी हैं

आदिशर्क्ति अमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः ।

अनेककोटि–ब्रह्माण्ड–जननी दिव्यविग्रहा ।। १२४।।

615) आदिशर्क्ति – वह जो आदिम शक्ति है, पराशक्ति जो ब्रह्मांड का कारण हैं

616) अमेय – वह जो मापा नहीं जा सकतौ

617) आत्मा – वह आत्मा है। वह जो सभी में स्व है

618) परमा – वह जो अन्य सभी से बेहतर है

619) पावनाकृतिः – वह जो पवित्रता की पहचान है

620) अनेककोटिब्रह्माण्डजननी–वह जो अरबों ब्रह्मांडों की जननी है

621) दिव्यविग्रह – वह जो खूबसूरती से बनाया गया है

टिप्पणी

क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य–पददायिनी ।

त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ।। १२५।।

622) क्लींकारी – वह क्लीम की आकृति है

623) केवला – वह जो पूर्ण है, जैसा कि वह पूर्ण, स्वतंत्र और बिना किसी विशेषता के है

624) गुह्या – वह जो गुप्त रूप से जाना जाय

625) कैवल्यपददायिनी – वह जो मोचन और साथ ही स्थिति देता है

626) त्रिपुरा – वह जो तीन पहलुओं में सब कुछ जीती है

627) त्रिजगद्वन्द्या – वह जो तीनों लोकों में पूज्य है

628) त्रिमूर्तिस् – वह त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) है

629) त्रिदशेश्वरी – वह सभी देवताओं के लिए देवी है

पाठगत प्रश्न– 15.1

(1) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. रक्तवर्णा ..... गुडान्न–प्रीत–मानसा ।
2. ..... मधुप्रीता बन्धिन्यादि–समन्विता ।
3. मुद्गौदनासक्त–चित्ता .....–स्वरूपिणी ।
4. सर्वौदन–..... याकिन्यम्बा–स्वरूपिणी ।
5. पुण्यकीर्तिः ..... पुण्यश्रवण–कीर्तना ।
6. ..... विद्या वियदादि–जगत्प्रसूः ।
7. ताम्बूल–पूरित–मुखी .....–कुसुम–प्रभा ।
8. ..... भक्तनिधिर्नियन्त्री निखिलेश्वरी ।
9. महाकैलास–..... मृणाल–मृदु–दोर्लता ।
10. कलात्मिका ..... काव्यालाप–विनोदिनी ।

आपने क्या सीखा?

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करना।
- देवी ललिता के लिए प्रयोग किये गये विशेषक शब्दों का अर्थज्ञान।
- देवी ललिता की विशेषताएं।

पाठांत प्रश्न

1. नीचे दिये गये पदों के अर्थ लिखिए–
   a) पददायिनी
   b) पावनाकृतिः
   c) देवेशी
   d) गोमाता
   e) रविप्रख्या
   f) किङ्करी

उत्तरमाला

16.1
1. मांसनिष्ठा
2. मेदोनिष्ठा
3. साकिन्यम्बा

4. प्रीतचित्ता
5. पुण्यलभ्या
6. विमर्शरूपिणी
7. दाडिमी
8. नित्यतृप्ता
9. निलया
10. कलानाथा